राष्ट्रीय स्तरीय कानूनी जागरूकता पुरस्कार से सम्मानित होंगे देश के जाने माने शिक्षाविद, पत्रकार एवं सामाजिक कार्यकर्ता: विजय गौड़, महासचिव, समिति

नई दिल्ली। भागीदारी जन सहयोग समिति एवं दिल्ली राज्य विधिक सेवायें प्राधिकरण द्वारा इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र, युग संस्कृति न्यास एवं हश्यम मीडिया प्रोडक्शन प्राइवेट लिमिटेड के सहयोग से आजादी के अमृत महोत्सव कार्यक्रम कड़ी में एक राष्ट्रीय विचार गोष्ठी का आयोजन सभागार, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र जनपथ होटल में आज (दिनांक 10 नवम्बर) किया जा रहा है। गोष्ठी का विषय है : कानूनी जागरूकता बढ़ाने में युवाओं की भूमिका कार्यक्रम के मुख्य अतिथि है ह्न वरिष्ठ अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश कँवल जीत अरोड़ा सदस्य सचिव दिल्ली राज्य विधिक सेवायें प्राधिकरण एवं सचिदानंद जोशी भारत सरकार के सचिव स्तर के अधिकारी एवं सदस्य सचिव इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र समारोह की अध्यक्षता करेंगे ह्न दिल्ली पुलिस के वरिष्ठ आई० पी० एस० अधिकारी संजय सिंह विशेष पुलिस आयुक्त संजय सिंह उदघाटन भाषण देंगे ह्न समारोह में अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश गौतम मनन विशेष सचिव दिल्ली राज्य प्राधिकरण, अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश नमृता अग्रवाल अतिरिक्त सचिव दिल्ली राज्य प्राधिकरण, डॉ राजेंदर धर सदस्य जिला उपभोक्ता कोर्ट एवं संरक्षक भागीदारी जन सहयोग समिति विशिष्ठ अतिथि के रूप में पधारेंगे।

समारोह में विभिन्न जिला विधिक सेवाएं प्राधिकरण में सचिव पद पर कार्यरत न्यायाधीश गण को भी विशेष तौर से आयोजन समिति के उत्साहवर्धन के लिए आमंत्रित किया गया है इस अवसर पर राष्ट्रीय स्तरीय कानूनी जागरूकता पुरस्कार से सम्मानित होंगे ह्न देश के जाने माने शिक्षाविद, पत्रकार एवं सामाजिक कार्यकर्ता जिनमे सम्मिलित है गुरु गोबिंद सिंह इंद्रप्रस्थ यूनिवर्सिटी के वाईस चांसलर डॉ महेश वर्मा, स्वामी विवेकानंद सुभारती यूनिवर्सिटी के प्रो - चांसलर डॉ० बी० पी० सिंह, डी ए वी यूनिवर्सिटी पंजाब की वाईस चांसलर डॉ जसबीर ऋषि, गुरु गोबिंद सिंह इंद्रप्रस्थ यूनिवर्सिटी के डीन एवं प्रोग्राम कोऑर्डिनेटर एन एस एस डॉ० वी वी रमन्ना रेड्डी, डॉ कावेरी शर्मा डीन स्कूल ऑफ लीगल स्टडीज के आर मंगलम यूनिवर्सिटी, डॉ वैभव गोयल भारतीय डीन सुभारती यूनिवर्सिटी, डॉ देविंदर चेयरमैन डिपार्टमेंट ऑफ लॉ पंजाब यूनिवर्सिटी, डॉ० साधना शर्मा प्रिंसिपल श्यामा प्रसाद मुखर्जी कॉलेज, डॉ स्वाति पाल प्रिंसिपल जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज, डॉ अनुराधा जैन प्रिंसिपल विप्स, डॉ विजय शंकर मिश्रा प्रिंसिपल सत्यवती कॉलेज (सांध्य पारी), डॉ प्रदीप डिमरी प्रोग्राम कोऑर्डिनेटर एन एस एस जे सी बोस यूनिवर्सिटी ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी हरियाणा, डॉ चन्दर मोहन प्रोग्राम कोऑर्डिनेटर एन एस एस के आर मंगलम यूनिवर्सिटी, डॉ स्मृति खोसला प्रोग्राम कोऑर्डिनेटर एन एस एस डी ए वी यूनिवर्सिटी पंजाब, डॉ रविकांत अदालतवाले जीवाजी यूनिवर्सिटी मध्य प्रदेश, डॉ ज्योति गौड़ पूर्व डीन सुभारती यूनिवर्सिटी, राजीव निशाना सम्पादक समाचार वार्ता, संजय उपाध्याय सम्पादक मदरलैंड वॉइस दैनिक समाचार पत्र, हामिद अली सम्पादक जनमत समाचार, गौरव तिवारी सम्पादक पुलिस पत्रिका, मनोज पांडेय ब्यूरो चीफ वीमेन एक्सप्रेस समाचार पत्र, सी इ ओ अधिवक्ता प्रतीक पांडेय लीगल जंक्शन मीडिया, राहुल झा हश्यम मीडिया प्रोडक्शन, सुमित अग्रवाल सेक्रेटरी जनरल सुधार एन जी ओ, अनुपमा अध्यक्ष ह्यूमन फाउंडेशन, आचार्य धर्मवीर संस्थापक युग संस्कृति न्यास कार्यक्रम के मुख्य संयोजक विजय गौड़ ने बताया की कार्यक्रम का सीधा प्रसारण यूट्यूब एवं फेसबुक पर भी किया जायेगा उन्होंने बताया कि 40 पुरस्कारों में देश के विभिन्न हिस्सों से प्रतिनिधित्व होगा जिन्होंने भागीदारी जन सहयोग समिति के साथ मिलकर करोना महामारी के विकट समय में कानूनी जागरूकता के विभिन्न विषयों पर राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय वेबिनार आयोजनों में सक्रिय भूमिका निभाई।

लोकपर्व है छठ: सनातन संस्था

» अभिषेक मानव

हमारे देश में सूर्योपासना के लिए प्रसिद्ध पर्व है छठ। मूलतः सूर्य षष्ठी व्रत होने के कारण इसे छठ कहा गया है। यह पर्व वर्ष में दो बार मनाया जाता है। पहली बार चैत्र में और दूसरी बार कार्तिक में। चैत्र शुक्लपक्ष षष्ठी पर मनाए जाने वाले छठ पर्व को चैती छठ व कार्तिक शुक्लपक्ष षष्ठी पर मनाए जानेवाले पर्व को कार्तिकी छठ कहा जाता है। पारिवारिक सुख-स्मृद्धि तथा मनोवांछित फलप्राप्ति के लिए यह पर्व मनाया जाता है। इस पर्व को स्त्री और पुरुष समानरूप से मनाते हैं। छठ व्रत के संबंध में अनेक कथाएं प्रचलित हैं; उनमें से एक कथा के अनुसार जब पांडव अपना सारा राजपाट जुए में हार गए, तब द्रौपदी ने छठ व्रत रखा। तब उसकी मनोकामनाएं पूरी हुई तथा पांडवों को राजपाट वापस मिल गया। लोक परंपरा के अनुसार सूर्य देव और छठी मइया का संबंध भाई-बहन का है। लोक मातृका षष्ठी की पहली पूजा सूर्य ने ही की थी।

छठ पर्व की परंपरा में बहुत ही गहरा विज्ञान छिपा हुआ है, षष्ठी तिथि (छठ) एक विशेष खगौलीय अवसर है। उस समय सूर्य की पराबैगनी किरणें (४ह्न३१५ह्नह्नी३ १८२) पृथ्वी की सतह पर सामान्य से अधिक मात्रा में एकत्र हो जाती हैं। उसके संभावित कुप्रभावों से मानव की यथासंभव रक्षा करने का सामर्थ्य इस परंपरा में है। पर्व पालन से सूर्य (तारा) प्रकाश (पराबैगनी किरण) के हानिकारक प्रभाव से जीवों की रक्षा संभव है। पृथ्वी के जीवों को इससे बहुत लाभ मिल सकता है।

सूर्य के प्रकाश के साथ उसकी पराबैगनी किरण भी चंद्रमा और पृथ्वी पर आती हैं। सूर्य का प्रकाश जब पृथ्वी पर पहुंचता है, तो पहले उसे वायुमंडल मिलता है। वायुमंडल में प्रवेश करने पर उसे आयन मंडल मिलता है। पराबैगनी किरणों का उपयोग कर वायुमंडल अपने ऑक्सीजन तत्त्व को संश्लेषित कर उसे उसके एलोट्रोप ओजोन में बदल देता है। इस क्रिया द्वारा सूर्य की पराबैगनी किरणों का अधिकांश भाग पृथ्वी के वायुमंडल में ही अवशोषित हो जाता है। पृथ्वी की सतह पर केवल उसका नगण्य भाग ही पहुंच पाता है। सामान्य अवस्था में पृथ्वी की सतह पर पहुंचने वाली पराबैगनी किरण की मात्रा मनुष्यों या जीवों के सहन करने की सीमा में होती है। अतः सामान्य अवस्था में मनुष्यों पर उसका कोई विशेष हानिकारक प्रभाव नहीं पडता, बल्कि उस धूपद्वारा हानि कारक कीटाणु मर जाते हैं, जिससे मनुष्य या जीवन को लाभ ही होता है।

छठ जैसी खगौलीय स्थिति (चंद्रमा और पृथ्वी के भ्रमण तलों की सम रेखा के दोनों छोरों पर) सूर्य की पराबैगनी किरणें कुछ चंद्र सतह से परावर्तित तथा कुछ गोलीय अपवर्तित होती हुई, पृथ्वी पर पुनः सामान्य से अधिक मात्रा में पहुंच जाती हैं। वायुमंडल के स्तरों से आवर्तित होती हुई, सूर्यास्त तथा सूर्योदय को यह और भी सघन हो जाती है। ज्योतिषीय गणना के अनुसार यह घटना कार्तिक तथा चैत्र मास की अमावस्या के छः दिन उपरांत आती है। ज्योतिषीय गणना पर आधारित होने के कारण इसका नाम और कुछ नहीं, बल्कि छठ पर्व ही रखा गया है।